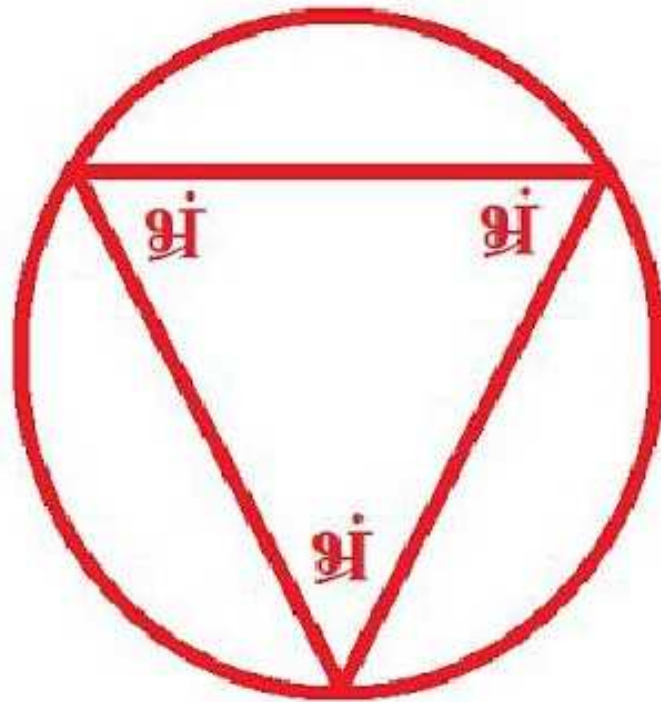


BHOOTINI SADHNA



मनुष्य की कल्पना का एक निश्चित दायरा होता है जिसके आगे वह सोच भी नहीं सकता है और तर्क बुद्धि उनको स्व ज्ञान से आगे कुछ स्वीकार करने के लिए हमेशा रोक लगा देती है, लेकिन आज के आधुनिक युग में वैज्ञानिक परिक्षण में भी ऐसे कई तथ्य सामने आये हैं जिसके माध्यम से यह सिद्ध होता है की मनुष्य की गति सिर्फ जन्म से ले कर मृत्यु तक की यात्रा मात्र नहीं है वरन मृत्यु तो एक पड़ाव मात्र ही है. मनुष्य मृत्यु के समय शरीर त्याग के बाद कोई विविध योनी को धारण करता है विविध नाम और उपनाम दिए जाते है.

भले ही आज का विज्ञान उसके अस्तित्व पर अभी भी शोध कर रहा हो लेकिन हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने इस विषय पर सेकड़ो हजारो सालो पहले ही अत्यंत ही प्रगाढ़ अन्वेषण कर के अतिथक विस्मय युक्त जानकारी जनमानस को प्रदान की थी. मनुष्य के मृत्यु के बाद उसकी निश्चय ही किर्मक गति होती है तथा इसी क्रम में विविध प्रकार की योनी उसे प्राप्त होती है या उसका पुनर्जन्म होता है. इसके भी कई कई भेद है, लेकिन जो प्रचलित है वह योनी है भुत, प्रेत, पिशाच, राक्षस या ब्रह्मराक्षस आदि है जो की कर्मजन्य होते है. यह विषय अत्यंत ही वृहद है. यहाँ पर हम चर्चा करेंगे तंत्र में इन से जुडी हुई प्रक्रिया की.

विविध योनियो से सर्बधित विविध प्रकार के प्रयोग तंत्र में प्राप्त होते हैं। जिसमें साधनाओं के माध्यम से विविध प्रकार के कार्य इन इतरयोनियो से करवाए जाते हैं। लेकिन यह साधनाएं दिखने में जितनी सहज लगती हैं उतनी सहज होती नहीं हैं इस लिए साधक के लिए उत्तम यह भी रहता है की वह इन इतरयोनियों के संबंध में लघु प्रयोग को सम्पन्न करे।

जिस प्रकार भुत एक पुरुषवाचक संज्ञा है उसी प्रकार भुतिनी एक स्त्रीवाचक संज्ञा है। वस्तुतः यह भ्रम ही है की भुतिनियाँ डरावनी होती हैं तथा कुरूप होती हैं, वरन सत्य तो यह है की भुतिन का स्वरूप भी उसी प्रकार से होता है जिस प्रकार से एक सामान्य लौकिक स्त्री का। उसमें भी सुंदरता तथा माधुर्य होता है। वस्तुतः यह साधना तथा साध्य के स्वरूप के चिंतन पर उनका रूप हमारे सामने प्रकट होता है, तामिस्र साधना में भयंकर रूप प्रकट होना एक अलग बात है लेकिन सभी साधना में ऐसा ही हो यह जरूरी नहीं है।

प्रस्तुत एक दिवसीय प्रयोग एक अचरज पूर्ण प्रयोग है, जिसे सम्पन्न करने पर साधक को भुतिनी को स्वप्न के माध्यम से प्रत्यक्ष कर उसे देख सकता है तथा उसके साथ वार्तालाप भी कर सकता है। साधको के लिए यह प्रयोग एक प्रकार से इस लिए भी महत्वपूर्ण है की इसके माध्यम से व्यक्ति अपने स्वप्न में भुतिनी से कोई भी प्रश्न का जवाब प्राप्त कर सकता है। यह प्रयोग भुतिनी के तामस भाव के साधन का प्रयोग नहीं है, अतः व्यक्ति को भुतिनी सौम्य स्वरूप में ही द्रश्यमान होगी।

यह प्रयोग साधक किसी भी अमावस्या को करे तो उत्तम है, वैसे यह प्रयोग किसी भी बुधवार को किया जा सकता है।

साधक को यह प्रयोग रात्री काल में १० बजे के बाद करे। सर्व प्रथम साधक को स्नान आदि से निवृत्त हो कर लाल वस्त्र पहने कर लाल आसान पर बैठ जाए। गुरु पूजन तथा गुरु मंत्र का जाप करने के बाद दिए गए यन्त्र को सफ़ेद कागज़ पर बनाना चाहिए। इसके लिए साधक को केले के छिलके को पिस कर उसका घोल बना कर उसमें कुमकुम मिला कर उस स्याही का प्रयोग करना चाहिए। साधक वट वृक्ष के लकड़ी की कलम का प्रयोग करे। यन्त्र बन जाने पर साधक

को उस यन्त्र को अपने सामने किसी पात्र में रख देना है तथा तेल का दीपक लगा कर मंत्र जाप शुरू करना चाहिए.

साधक को निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जाप करनी है इसके लिए साधक को रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना चाहिए.

भ्रं भ्रं भ्रं भुतेश्वरी भ्रं भ्रं भ्रं फट्

(bhram bhram bhram bhuteshwari bhram bhram bhram phat)

मंत्र जाप पूर्ण होने पर जल रहे दीपक से उस यन्त्र को जला देना है. यन्त्र की जो भष्म बनेगी उस भष्म से ललाट पर तिलक करना है तथा तिन बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करना है. इसके बाद साधक अपने मन में जो भी प्रश्न है उसके मन ही मन ३ बार उच्चारण करे तथा सो जाए. साधक को रात्री काल में भुतिनी स्वप्न में दर्शन देती है तथा उसके प्रश्न का जवाब देती है. जवाब मिलने पर साधक की नींद खुल जाती है, उस समय प्राप्त जवाब को लिख लेना चाहिए अन्यथा भूल जाने की संभावना रहती है. साधक दीपक को तथा माला को किसी और साधना में प्रयोग न करे लेकिन इसी साधना को दुबारा करने के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है. जिस पात्र में यन्त्र रखा गया है उसको धो लेना चाहिए. उसका उपयोग किया जा सकता है. अगर यन्त्र की राख बची हुई है तो उस राख को तथा जिस लकड़ी से यन्त्र का अंकन किया गया है उस लकड़ी को भी साधक प्रविहित कर दे. साधक दूसरे दिन सुबह उठ कर उस तिलक को चेहरा धो कर हटा सकता है लेकिन तिलक को सुबह तक रखना ही ज़रूरी है.